29

क्रूस की बड़ी बातें, 2

2 कुरिन्थियों 5:17-21

''... परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उस के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है'' (2 कुरिन्थियों 5:19)।

''मिलाप''

उद्धार विकल्प के द्वारा था और है। विकल्प का उद्देश्य मिलाप है। आइए अपने मन से मिलाप के बारे में हर तरह की पूर्वधारणा या गलत विचार को निकाल दें, ताकि इस प्रक्रिया से गुजरते हुए एक नई शुरुआत कर सकें। इसके महत्व के कारण इस बात को सुनिश्चित बनाएं कि हमें इसे सही समझना है।

आज क्षमा ''चलन में'' है। बच्चों को दिल से अफ़सोस के साथ क्षमा मांगने की जगह बिना विचारे ''सॉरी'' कहना सिखाया जाता है। खेद, ''चलन में'' है जबकि ज़िम्मेदारी को ''दरकिनार'' कर दिया गया है। वचन दिल से मन फिराव की बात लिखता है। वचन में ''खेद करना'' मिलता ही नहीं है।

दो लोगों की कल्पना करें, जो गहरे मित्र थे और फिर उनके सम्बन्ध टूटने की कल्पना करें। उनके लिए मिलाप का अर्थ, पहले की तरह सम्बन्ध बहाल करना है। उनके लिए मिलाप का अर्थ खोया हुआ मिलना, मरा हुआ जीवित होना तथा पाप क्षमा किया जाना है। यह कैसे हो सकता है? सबसे पहले तो किसी और से अधिक इस बहाली की इच्छा का नाराज़ व्यक्ति में होना आवश्यक है। दूसरा, गलती करने वाले में भी अधिक इच्छा होना आवश्यक है। आज का समाज ज़िम्मेदारी से मुक्त होना चाहता है। बहाली के लिए नाराज़ तथा गलती करने वाला, *दोनों* को कोई भी कीमत देने के लिए तैयार होना आवश्यक है। हमें इस सच्चाई को समझना आवश्यक है!

क्षमा का अर्थ अलग रह कर तर्क बन्द करना नहीं है। मिलाप का अर्थ-''शीत युद्ध'' नहीं है। बहुत से पापी बिना मिलाप के ही क्षमा चाहते हैं। वे ज़िम्मेदारी से मुक्त होना चाहते हैं पर बहाल नहीं होना चाहते। क्षमा किए जाने का अर्थ है कि हम मिलाए जा सकते हैं और साथ चलते हैं।

एक अर्थ में, गलती करने वाला, नाराज़ व्यक्ति के रहम पर है। हमारा वचन पाठ हमें बताता है कि परमेश्वर ने हमें अपने साथ मसीह में मिलाया है। परमेश्वर ने संसार को अपने साथ मिलाया है, अपने आप को संसार के साथ नहीं मिलाया। पहले कौन झुका? परमेश्वर झुका! यीशु मेरे मन फिराने से पहले ही मेरे लिए मरा। परमेश्वर ने मेरे पैदा होने से पहले ही (सुसमाचार के द्वारा) क्षमा उपलब्ध करवाई! परमेश्वर चाहता है कि पापी वापस आ जाएं। पर पापियों में भी वापस आने की इच्छा होना

आवश्यक है। अगर परमेश्वर कुछ न करे तो मनुष्य हमेशा के लिए खोया रहेगा। हम उसके दुश्मन हैं, पर हमें मिलाया जा सकता है। पहले कौन झुका? प्रेम ने पहले प्रतिक्रिया दिखाई!

- नाराज़ व्यक्ति के अनुग्रह के बिना क्षमा असम्भव है,
- गलती करने वाले के मन फिराए बिना क्षमा असम्भव है।

क्षमा करने के लिए *एक* व्यक्ति की ही आवश्यकता होती है। मिलाए जाने के लिए दो होना आवश्यक है। हम किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता नहीं कर सकते, जो अपनी सहायता स्वयं नहीं कर सकता। क्षमा एक अस्वाभाविक काम है। नाराज़ व्यक्ति कीमत चुकाने के लिए तैयार नहीं है; गलती करने वाला मन नहीं फिराना चाहता। फिर भी *दोनों* का मिलाया जाना आवश्यक है। जब तक क्षमा मिलाप की तरफ नहीं लाती, तब तक क्षमा किसी काम की नहीं है।

क्षमा लक्ष्य नहीं है (जैसे हमारा समाज सोचता है); बल्कि क्षमा तो एक माध्यम है और लक्ष्य मिलाप है। क्षमा हमें जुर्माने से ही नहीं छुड़ाती, बल्कि टूटा सम्बन्ध भी बहाल करने की अनुमति देती है।

''क्षमा'' के नियम

शेक्सपियर ने कहा है, ''होना, या न होना, यही प्रश्न है।''[1] बाइबल कहती है, ''क्षमा करना, या न करना यही विचाराधीन विषय है।'' मेरे लिए क्षमा करना आवश्यक है। मेरे लिए क्षमा करना आवश्यक है। मुझे क्षमा किया जाना आवश्यक है। ये जीवन के विचाराधीन विषय हैं। क्षमा वह पुल है, जिस पर से हम सबके लिए गुज़रना आवश्यक है, जब हम क्षमा करते हैं तब हम क्या कर रहे होते हैं? क्षमा प्राप्त करने के लिए हम क्या करते हैं? पौलुस ने कहा। ''और एक दूसरे पर कृपालू, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी दूसरे के अपराध क्षमा करो'' (इफिसियों 4:32)। क्षमा का आरम्भ क्षमा के साथ होता है। पहले दयालु बनो। फिर क्षमा के नियम को व्यवहार में लाओ। वे नियम क्या हैं?

पहला नियम: दया रहित को क्षमा नहीं किया जा सकता। मत्ती 6:12–15; मरकुस 11:24–26; तथा लूका 11:4 में यीशु की प्रार्थना पढ़ें (मत्ती 18:35; लूका 6:37; 2 कुरिन्थियों 2:7 भी देखें)। केवल सिद्धांत ही न सीखें, उन्हें व्यवहार में लाना भी आरम्भ करें। हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य क्षमा करना सीखना होना चाहिए। क्षमा करने में पहल करें।

दूसरा नियम: यदि समझदारी के कारण ही हो तो नाराज़ व्यक्ति को क्षमा करना आवश्यक है। बिना क्षमा के मनुष्य रूखा, निकम्मा और क्रोधित हो जाता है। भूत को भविष्य पर हावी नहीं होने दिया जाना चाहिए। यदि आप दोषी के मन फिराने की प्रतीक्षा में रहेंगे तो जीवन भर प्रतीक्षा ही करते रहेंगे। एक बार जब आप मन से क्षमा कर देते हैं तो दोष मुख्य मुद्दा नहीं रह जाता। दोषी व्यक्ति मन फिराए या न।

तीसरा नियम: बिना मन फिराव के क्षमा नहीं हो सकती। कुर्सी और प्लेट उड़ाऊ पुत्र की ही थी चाहे वह दूसरे देश में ही चला गया था (लूका 15), परन्तु उसके लिए उन्हें इस्तेमाल करने के लिए मन फिराकर अपने घर जाना आवश्यक था (लूका 15:11–24)। दूर देश में रहते और पाप करते हुए आपको क्षमा नहीं मिल सकती थी। क्षमा तो थी, परन्तु बिना कमाए, परन्तु फिर भी यह परमेश्वर की क्षमा की शर्त सहित थी। पिता उड़ाऊ पुत्र को वापस आने के लिए विवश नहीं कर पाया। परमेश्वर हमारा उद्धार नहीं कर सकता जब तक हम उसे करने न दें।

निर्दोष व्यक्ति को क्षमा की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उन्हें उद्धार की और सही सिद्ध किए जाने की आवश्यकता है। पापी लोग सिद्ध नहीं हैं। हमें अपने पाप की पूरी ज़िम्मेदारी माननी होगी कि ''यह मैंने किया है।'' पढ़ें भजन संहिता 51. फिर हमें मन फिराना (बदलना) आवश्यक है। कोई कह सकता है ''इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'' पाप, अपराध और गुमराही से फर्क तो पड़ता है! पापी लोग आज्ञा न मानने वाले होते हैं!

पाप के साथ निपटना आवश्यक है। आपको पतरस याद है? वह सात बार क्षमा करने को तैयार था (मत्ती 18:21-35)। यीशु ने उसे सत्तर गुणा बढ़ा दिया! लूका 17:3, 4 में उसने ''सात'' के अंक का इस्तेमाल किया। पतरस सुन रहा था, परन्तु वह सोच, समझ या व्यवहार में लाना आरम्भ नहीं कर रहा था। क्षमा करने के लिए कोई भी बात बड़ी या छोटी नहीं है (मत्ती 18:21-35)। इसके साथ ही क्षमा पाप करने का लाइसेंस नहीं है (गलातियों 6:7)।

मिलाप क्षमा से बढ़कर है। उद्धार को क्षमा तक सीमित करना इसकी भरपूरी को लूटना है। मन फिराव केवल पाप से मुड़ना ही नहीं है, बल्कि इसके लिए परमेश्वर की ओर मुड़ना भी आवश्यक है। परमेश्वर को सन्तान चाहिए, दास नहीं (लूका 15)। पापी लोग अपना मिलाप कभी नहीं पा सकते, परन्तु परमेश्वर की ओर से इसकी पेशकश करने पर इसे ठुकरा अवश्य सकते हैं। प्रसिद्ध व्यवहार ''मैं यहां तुम्हारा न्याय करने के लिए नहीं आया'' दोहराया जाना आवश्यक है! मन फिराव में पाप का न्याय शामिल है। जब तक हम पाप को वैसे नहीं देखते जैसे परमेश्वर देखता है, तब तक हम न्याय, मन फिराव और क्षमा में नहीं हो सकते। मन फिराव कभी भी किया जा सकता है, परन्तु न करने से समय हाथ से निकल सकता है।

चौथा नियम: क्षमा से कष्ट रहित भविष्य की प्रतिज्ञा नहीं मिलती। क्षमा किए गए पाप के परिणाम हैं और भूल जाने को क्षमा नहीं कहा जा सकता। परमेश्वर हमारे पाप बिल्कुल याद नहीं करता (यिर्मयाह 31:34; इब्रानियों 8:12; 10:17)। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उसकी ''आत्मिक स्मरण-शक्ति खत्म हो'' गई है। पाप के परिणाम हैं। दाऊद का पुत्र मर गया। क्षमा किए गए इस्राएलियों को दण्ड मिला। यरूशलेम को (70 ईस्वी में) ''बर्तन की तरह मांज दिया गया।'' पापियों के लिए विपदा अभी भी है। दाऊद लिखता है, ''मेरा पाप मेरे सामने है'' (भजन संहिता 51:3)।

क्षमा है तो दान, परन्तु पृथ्वी पर सबसे महंगा है (रोमियों 5:10)। क्षमा जैसे उपहार बड़ी दीनता और बड़े आनन्द से ग्रहण किए जाने चाहिए। अपनी क्षमा को ग्रहण करके ही हम उससे वैसे प्रेम करते हैं जैसे हम कर सकते हैं और जैसे हमें करना चाहिए (लूका 7:36-50)। क्षमा करने का अर्थ भूल जाना नहीं, बल्कि नये सिरे से आरम्भ करना है।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]विलियम शेक्सपियर *हैमलेट* 3.1.56.